क्या कहें हम
हाल अपनी शाला का

क्या कहें हम हाल अपनी शाला का,
है बड़ा जंजाल अपनी शाला का।

नीली नीली पहने वर्दी,
गर्मी हो या होवे सर्दी,
ताल बड़ा बेताल अपनी शाला का,
यही तो जंजाल अपनी शाला का।

कापी पर मत थूक लगाओ,
करके सुथरा काम दिखाओ।

यही चलन व चाल अपनी शाला का,
है बड़ा जंजाल अपनी शाला का।

मेज पे कोहनी नहीं टिकाओ,
कुर्सी को भी मत खिसकाओ।

टेढ़ा यही सवाल अपनी शाला का,
है बड़ा जंजाल अपनी शाला का।

गुपचुप बैठो, बात करो ना,
कक्षा में तुम चलो फिरो ना,
हुक्म सके ना टाल अपनी शाला का,
है बड़ा जंजाल अपनी शाला का।

बतुलिया

बतुलिया कक्षा में भिटपिट करे,
बच्चों को घर-घर पिंगोटी भरे,
बतुलिया कक्षा में भिटपिट करे।

चीजें उठाकर पटकती बतुलिया,
छिन-छिन में उलकर गटकती बतुलिया,
बतुलिया कक्षा में भिटपिट करे।

लगी घात जाती है भिड़ती कहीं,
चिढ़ाती है पर आप चिढ़ती नहीं,
कस-कस के देती है थप्पड़ खरे,
बतुलिया कक्षा में भिटपिट करे।

चंदू

चंदू की थी बुद्धि थोथी,
हर दम पढ़ता पुस्तक पोथी,
मुख से झर-झर झाड़े ज्ञान
जैसे पंडित हो विद्वान।

एक रोज़ ले पोथी संग
मन में घोल रहा था रंग,
बड़े बड़े मैं काम करूंगा
दुनिया भर में नाम करूंगा।

लगे किसी के घर में आग,
पहुंचूंगा मैं झटपट भाग,
जलते ही में कूद पड़ूंगा,
परोपकार के लिये लड़ूंगा।

मरतों को दे जीवन-दान
जग में पाऊंगा सम्मान।
हरता जो परजन की पीर,
सो ही तो कहलाता वीर।

दौड़ी-दौड़ी मुन्नी आई,
जल्दी आना चंदू भाई,
हाथ जला बैठा है लल्ला,
मचा रहा है कैसा हल्ला।

अम्मा गई काम पर बाहर,
मेरे सिर पर ही सारा घर,
किधर किधर मैं करूं बताओ,
जाकर ज़रा दवाई लाओ।

ध्यान हुआ चंदू का भंग,
बोला, क्यों करती है तंग?

यहां जो आई जल्दी-जल्दी,
क्यों न भर दी चूना हल्दी?
छोटी-छोटी सी बात के खातिर
मेरे पास न आना अब फिर,
जब देखो तब घर का झिंकना,
ताक में घर दूं पढ़ना लिखना?

मुन्नी ने जो झिड़की खाई,
वापस उल्टे पैरों धाई,
रोते लल्ला को चुमकारा,
किसी तरह दिन काटा सारा।

शाम पड़ी जब आई माता
और सुनी चंदू की गाथा,
हृदयहीनता पर झल्लाई,
चंदू के कमरे में आई।

बिलख रहा था छोटा भाई,
ज़रा न लाई गई दवाई?
पढ़-पढ़ कर बनी है ज्ञानी,
घर के लिये निठुर अभिमानी!

घर वालों के काम न आए
ऐसा पढ़ना भाड़ में जाए!
छिः छिः यह कैसा अंधेर,
घर में गीदड़ बाहर शेर!

बड़ा हूंगा

बड़ा हूंगा, बड़ा हूंगा,
करूंगा यह, करूंगा वह,
नहीं तब मानना होगा
बड़े मेरे करेंगे जो।

अगर आयेगी एक रोटी
तो दो रोटी न खाऊंगा,
जभी मन मेरा चाहेगा
तो घर गोकुल के जाऊंगा।

मनाई तब कहां होगी
पतंगों, डोर, मांझे की,
जो पैसे पास न होंगे,
करेंगे बात सांझे की।

न माता का पिता का ना
किसी का मुझ को डर होगा,
मैं खुद ही तो बड़ा हूंगा
औ: मेरा ही तो घर होगा।

फिकर माता को होगी फिर
न नहलाने धुलाने की,
छुटेगी और भी आदत
ज़बरदस्ती सुलाने की।

बड़ा होकर बड़ों ही की
तरह बातें बनाऊंगा,
मगर उनकी तरह छोटों
को हर्गिज़ ना सताऊंगा।

ज़रूरत ही न होगी तब
मुझे शाला में जाने की,
पहाड़े याद करने की
या घोटा लगाने की।

मैं हूँ एक नन्हीं-सी बाला

मैं हूँ एक नन्हीं-सी बाला,
डरना मैंने जाना ना,
मनमानी हूँ करने वाली,
रोब किसी का माना ना।

भोला-भोला मुखड़ा मेरा,
अंखियां काली कजरारी,
ठुमक-ठुमक कर उड़ती-फिरती
तितली जैसी मतवारी।

रात को जब झींगुर गुंजाएं,
मां कहती परियां गातीं,
अच्छे-अच्छे बच्चों को वह
रोज़ सुलाने को आतीं।

भोलेपन में मैं कह उठती,
अंदर उन्हें बुलाओ ना,
मीठी झिड़की दे मां कहती,
रात पड़ी, सो जाओ ना।

ना जाने सोते में कैसे
घर से बाहर निकल पड़ी
इन परियों का भेद लगाने की
थी मन में टोह बड़ी।

दूर आसमान पे तारे
मुझे देख मुस्काते थे
बड़े प्यार से जगमग करते
अपने पास बुलाते थे।

छिन के छिन में पंख जड़ाऊ
मेरे कंधों आन जुड़े,
ऊंचे-ऊंचे उठते जाते
मुझ को लेकर दूर उड़े।

आकाशी गंगा पर उड़ती
देखी परियों की टोली,
मुझे बुलाने आई रानी
साथ उसी के तब हो ली।

सब की सब तब परियां आईं
मुझको गले लगाने को,
हुआ सवेरा, उठो लाडली,
अम्मा आईं जगाने को।

छूना मत

चाचा बड़े खिलौने लाए
मुनिया बब्बन दौड़े आए।
देखा मोटर, इंजन गाड़ी,
सुंदर गुड़िया पहिने साड़ी।
लेने को जो हाथ बढ़ाया
पीछे से कोई चिल्लाया
हाँय हाँय बच्चों, छूना मत!
दूर से देखो, छूना मत!
चटपट खोली वह अलमारी,
बंद हो गई चीजें सारी।
भरे पड़े थे बहुत खिलौने,
गेंद, लट्टू, चिड़ियां, बौने।
यही हुक्म था छूना मत,
दूर से देखो, छूना मत!
पारा धरा था सुंदर बाजा,

मुनिया बोली बब्बन, आजा,
हम तुम दोनों गाने गाएं
सा. रे. गा. म. आओ बजाएं।
बाजे को जो हाथ लगाया,
पीछे से कोई चिल्लाया
हाँय हाँय बच्चों, छूना मत!
दूर से देखो, छूना मत!
मुनिया बब्बन बाहर आए
रोना जैसा मुँह बनाए
खूब चला है – छूना मत!
कौन बला है – छूना मत?
जिधर भी जाओ – छूना मत
हाथ लगाओ – छूना मत!
हैं! छू ऊ ऊ ऊ ना मत!

हूं हां न पड़े सुनाई

चुप, चुप, चुप – मत शोर मचाओ,
बाबा आये, चुप हो जाओ।
ज्यों ही बाबा घर पर आते,
बच्चे सारे डर डर जाते।
खुद तो बाबा शोर मचाते,
बच्चे बोले – चट धमकाते।
बच्चे घर में दें दिखलाई
हूं हां न पड़े सुनाई।

बाल नगर

बाल नगर की सुनों कहानी,
नन्हा राजा, नन्ही रानी,
नन्हें नन्हें घर हैं सुंदर,
सुथरे–सुथरे बाहर अंदर,
रोना धोना कोई न जाने
खेल करें मिलकर मनमाने।
छोटे–छोटे खेल खिलौने,
बहल पहल है कोने कोने।
आसमान से जगमग तारे
घर घर दीप जगाते सारे,
चंदा मामा नित ही आते
भर–भर दूध कटोरी लाते।
चंदा की किरनों में झूले
छोटे–छोटे खाट खटोले
सुख की निंदिया बालक भोले।

लोरी

डगर डगर में गली गली में
करती निंदिया फेरे,
झांक झरोखे खड़ी पुकारे
सो जा बालक मेरे।
अंखिया तेरी कजरे वारी
झूम झूम मुख जावें
ठाड़ी निंदिया खाट को घेरे,
सो जा बालक मेरे।

थपक-थपक कर मइया तेरी
मीठी लोरी गावे,
सिर से लेत बलइयां तेरे,
सोजा बालक मेरे।

चंदा की नइया पर चढ़कर
स्वप्न देश को जाओ,
आ जाना फिर बड़े सवेरे
सोजा बालक मेरे।

चूरन

लो सरकार, मेरा चूरन,
मजेदार, मेरा चूरन।
इस चूरन की बड़ी बड़ाई
छोटे मोटे खाते भाई।

गुदी में बुद्धी पहुंचाई
फिर दरकार मेरा चूरन।
खों-खों खांसी से बेहाल
खाते इसको बच्चे बाल।

चुटकी भर भर मुंह में डाल
ले चटखार मेरा चूरन।
मेरा चूरन बड़ा निराला,
डाला इसमें मिरच मसाला।
एक बार का चखने वाला
ले हर बार मेरा चूरन

बेतुक

कद्दू काट मृदंग बनाई
नींबू काट मजीरा,
सात तुरइंया गाने बैठी,
नाचे बालम खीरा।

आ री को को, जा री को को
जंगल फर्कि बेर
बच्चों को तू ला दे, को को
झोली भर भर केर।

अगर चंदन का पालना
औः रेशम वाली डोर
दिल्ली से दिल वालन आई
देगी झोंटे ज़ोर।

छुक-छुक करती धुंआ उड़ाती
काली भम्बो आई।

गाड़ी भर भर देश देश से
लाई लोग लुगाई।

सड़क किनारे खड़ा सिपाही
लाल लाल अरू लम्बा
दादा जी ने नाम बताया
ये ही डाक का बम्बा।
बाल नगर से लाई को को
तीन सलोने बाल
एक कुटावे एक पिसावे
एक चलावे दाल।

आलू नाचे, बैगंन नाचे
कुल्फड़ा और तुरइया
चकले ऊपर बेलन नाचे
पूरी बीच कढ़इया।

हमें न भाए

कक् कक् करती अम्मा मुर्गी
ले बच्चों की फ़ौज
घर से निकली दाना चुगने
करने को कुछ मौज।

कक् कक् करती पंजों से
छिटकाती कूड़ा करकट
छिपा हुआ कोई दान दुनका
पता लगाती चट पट।

आओ मेरे चुग्गू मुग्गू
भूरे काले आओ
नन्हीं मुन्नी चोंचों से
चुग चुग दाने खाओ।

चुग्गू मुग्गू भूरे काले
दौड़े दौड़े आए
नन्हीं मुन्नी चोंचों से
चुग चुग दाने खाए।

एक बड़ा मक्की का दाना
ज्योंही पड़ा दिखाई
चोंच में अपनी उसे उठाकर
मुर्गी घर ले आई।

आओ मेरे चुग्गू मुग्गू
भूरे काले आओ
इस दाने को हम बोएंगे
धरती ज़रा खुदाओ।

चुग्गू बोला – हमें न भाए
मुग्गू बोला – हमें न भाए
भूरे काले खड़े खड़े
बस देखें आंख फिराए।

अच्छा अच्छा – बोली मुर्गी
मत कोई भी आओ
मैं ही सारा काम करूंगी
हटो यहां से जाओ।

थोड़े दिन में पककर मक्की
कटने हुई तैय्यार
अम्मा मुर्गी ने बच्चों को
फिर से लिया पुकार।

आओ मेरे चुग्गू मुग्गू
भूरे काले आओ
मक्की अब तैय्यार खड़ी है
आकर उसे कटाओ।

चुग्गू बोला – हमें न भाए !
मुग्गू बोला – हमें न भाए !
भूरे काले खड़े खड़े
बस देखें आंख फिराए।

अच्छा अच्छा – बोली मुर्गी
मत कोई भी आओ
मैं ही सारा काम करूंगी
हटो यहां से जाओ।

काट कूट कर अब मक्की की
थी पिसाने की बारी

अम्मा मुर्गी क्या क्या करती ?
इकली जान बिचारी।

आओ मेरे चुग्गू मुग्गू
भूरे काले आओ
दाने ज़रा पिसाने को
यह चक्की पर ले जाओ।

चुग्गू बोला – हमें न भाए
मुग्गू बोला – हमें न भाए
भूरे काले खड़े खड़े
बस देखें आंख फिराए।

अच्छा अच्छा – बोली मुर्गी
मत कोई भी आओ
मैं ही सारा काम करूंगी
हटो यहां से जाओ।

आटा पिसवा लाई मुर्गी
सब मेहनत कर पूरी
घी औः शक्कर डाल बनाई
खूब मजे की चूरी।

आओ मेरे चुग्गू मुग्गू
भूरे काले आओ
मजे दार बनी है चूरी
जरा देख तो जाओ।

चुग्गू मुग्गू भूरे काले
दौड़े दौड़े आए
अम्मा हमको देना चूरी
बहुत हमें यह भाए!

दूर ही दूर रहो अब बच्चों
चूरी तुम्हें सिखाए
जो कटवाए, जो पिसवाए
सो ही चूरी खाए!

झमूरी, झमूरा

झमूरी बहिन थी
झमूरा था भाई,
आपस में होती थी
हर दम लड़ाई।

कहीं एक कपड़े का
उनका गदहा था,
जो कमरे में खूंटी पे
रक्खा टंगा था।

उछल कूद करते
झमूरे जी आये,
गदहा देख कर
रुक गये – ठिन ठिनाये।

सुनो मेरी अम्मा,
गदहा मुझको दे दो,

मैं खेलूंगा इससे
ज़रा मुझको दे दो।

तो यूं बोली अम्मा
सुनो जी, झमूरे,
गदहा फाड़ दोगे
हो शैतान पूरे।

झमूरी ने उसको
अगर देख पया
बिगड़ जायेगा खेल
सारा बनाया।

अगर तुम दोनों में
हो गई लड़ाई,
गदहे की ही शामत
समझ लेना आई।

तो बोला झमूरा
नहीं मैं लड़ूंगा,
बखेड़े में झगड़े के
मैं क्यों पड़ूंगा ?

ग़रज़ यूं मचल कर
लिया उस गर्दे को
औः कगरे से ग़ायब
किया उस गदहे को।

उधर से कहीं
आन पहुंची झमूरी
बिना उसके गोया
थी महफ़िल अधूरी।

मेरा गदहा
आप क्यों लेके आए ?
बड़ी शान से
जा रहे हैं उठाए।

तो बोला झमूरा
नहीं खुद लिया है
मुझे मेरी अम्मा ने
आप ही दिया है।

झमूरी जी तुम
हम से लड़ना नहीं अब,

बिना बात रामझे
झगड़ना नहीं अब।

तो बोली झमूरी
अजब शान, भइया!
मुझी को तो लड़ने की
है बान भइया!

दोनों ही हाथों से
बजती है ताली,
बिना बात झगड़ूंगी
मैं ही तो ख़ाली।

सूरत तो देखो,
यह इनका गदहा है!
इन्हें इनकी अम्मा ने
आप ही दिया है!

यह मेरा गदहा है,
इधर लाइये आप
औः अम्मा से जाकर
कह आइये आप।

लड़ाके थे दोनों
मिली बात थोड़ी,
शुरू हो गई बस
झिंझोड़ा – झिंझोड़ी।

झमूरी झमकती
यह मेरा गदहा है।
झमूरा बमकता
यह मेरा गदहा है!

दोनों के हाथों में
दोनों सिरे थे
शामत के मारे
बिचारे गदहे के।

आपे से बाहर
बेहद दोनों
गदहा फट गया
औः गिरे भद्द दोनों!

गदहा पा गई मैं
यह समझी झमूरी,

झमूरे जी समझे
हुई जीत पूरी।

दोनों का गुस्सा
ज़रा छंट गया था,
जो उठकर के देखा
गदहा फट गया था!

दोनों को आई
फिर अम्मा की याद
गदहे की मरम्मत
करने के बाद।

अम्मा ने ऐसी
चुड़की लगाई
जाओ, करो और
दोनों लड़ाई!

मेरे तेरे का
टंटा न रोको,
न तोको न मोको
ले झाड़ झोंको।

भला मैं कौन?

मैं चमक चमक, मैं गोल गोल
जाओ बाज़ार, कुछ लाओ मोल।
भला मैं कौन ? (रूपया)

मैं लम्बी लम्ब तइंगी हूँ,
रंगो में रंग बिरंगी हूँ
पर बीच मेरा काला काला
मैं कौन, बताओ तो लाला ? (पेंसिल)

गोल गोल चांदी का थाल
रक्खा नील कुंड में डाल
तिमरे! आस पास हैं बिखरे मोती
काली रानी उजली होती
भला मैं कौन ? (चांद)

चील सा फर फर रहा उड़ाये

पेट के अंदर जन बैठाये
नाक से अपनी पंखा डोले
कौन, भला कोई तो बोले ? (हवाई जहाज)

एक गदेली पांच सवार
मिलकर सब करते हैं वार
इनके आगे काम जो आवे
छिन के छिन में निबटा जाए। (हाथ)

गुंद खुल गुंद खुल दो हमजोली
खेल रहे हैं आंख मिचोली
दो ही हैं नींबू सी फांकें
टुकुर टुकुर कर इत उत झांकें। (आंखें)

लाल लाल सोने का गोला
बका चौंध का पहिने झोला
छोड़ रहा सोने के बाण
इन बाणों में जीवन दान। (सूरज)

और बुलाओ एक जना

एक बुढ़ी ने बोया दाना
गाजर का था पेड़ लगाना,
दाने में से किल्ला फूटा,
किल्ले से वह बन गया बूटा।
थोड़ी-थोड़ी खाद पड़ी,
गाजर हाथोंहाथ बढ़ी
सोचा तोड़ उसे अब लाऊं,
हलवा गरमा-गरम पकाऊं।
पकड़ी चोटी, जोर लगाया
हाथ नहीं पर कुछ भी आया।
नहीं बना, कुछ नहीं बना,
और बुलाओ एक जना!
तब बुढ़ी का नाती आया,
मिलकर उसने जोर लगाया।
नहीं बना, कुछ नहीं बना,
और बुलाओ एक जना!
तब बुढ़ी का कुत्ता आया
हांप-हांप कर जोर लगाया।
नहीं बना, कुछ नहीं बना,
और बुलाओ एक जना!
तब बुढ़ी की आई बिल्ली
सुनकर सब की चीख़ा चिल्ली,
सबने मिलकर जोर लगाया
गाजर को उखाड़ तब पाया।
लो भई, ऐ लो भई,
जीत हमारी हो गई!

यह बेर लो झरबेरी

लो बेर यह झरेबेरी,
मैं लाई भरी चंगेरी।
थी बड़ी कटीली झाड़ी,
जा अट्की मेरी साड़ी
औः बिंधी उंगरिया मेरी,
मैं लाई भरी चंगेरी।

खट मिट्ठे बेर हमारे
बच्चों को हैं अति प्यारे,
ले जाते जेब भरे री
कर खाली मेरी चंगेरी।
मैं लाई भरी चंगेरी,
यह बेर लो झरबेरी।

हिन्दी भाषा

मुख से फूलों सी झड़ती है
आंखों को सुखकारी हिन्दी,
कानों में अमृत बरसाती
भाषा अपनी प्यारी हिन्दी।

मधुर मधुर स्वर,
मधुर ही व्यजंन
जिनसे बनी हमारी हिन्दी
फूलों जैसी अक्षर माला की है यह फुलवारी हिन्दी।

प्रेम संदेशा लेकर आई
जनता की हितकारी हिन्दी,
राष्ट्र को एक बनाने वाली
भाषा यही हमारी हिन्दी।

जेमीमा

पानी मेरा ला, जेमीमा।
लेने जाती हूँ।
वसंत इस वक्त बजा है क्या, जमीमा ?
अभी बताती हूँ।

पानी लेने गई जमीमा,
लगी हमें ऊंघाई,
ज़रा देर छुटकारा पाया,
ने / हमारी खैर मनाई।

लेकर पानी चट जमीमा
आई मेरे पास।
इतनी जल्दी कैसे आई ?
जाते रहे हवास।

स्लीपर मेरा ला, जमीमा,
चाय करो तैय्यार.
मैं भी उठता हूँ, जमीमा,
कपड़े मेरे झाड़।

झट से ग़ायब हुई जेमीमा
चढ़ा हमें खुमार,
बिस्तर छूटा नहीं हमारा,
कोशिश करी हज़ार।

खटपट करती आई जेमीमा,
खूब मचाया शोर।
झटपट उठे हम भी भाई
बिस्तर अपना छोड़।

इस वक्त बजा है क्या, जेनीमा ?
नौ बजने को आये।
दफ़्तर जाते हैं, जमीना
देर हुई, बिन खाये।

वक़्त शाला का हुआ

वक़्त शाला का हुआ, खाने में अब भी देर है,
माँ कहे मैं क्या करूं काम इतना ढेर है।

ढूंढ़ने वर्दी चले, देखा तो मैले में पड़ी,
मन में सोचा बाप रे, यह और भी अंधेर है।

देर से पहुंचे जो हम, शाला में जोकर-से बने,
सहमे हुए टीचर को देखा, जैसे कोई शेर है।

पूछ बैठी हम से वह, क्या आये हो ससुराल से?
इस ग़रारे का तो देखो कितना चौड़ा घेर है!

किस से कहें कि वक़्त पर, कपड़ा नहीं खाना नहीं,
तिलमिला कर रह गये, यह सब ग्रहों का फेर है!

एक एक

एक एक, बस एक एक
एक एक पढ़ अक्षर
मैंने ज्ञान लिया झोली भर
बस एक एक.....

एक एक शर टांका
मेरा काम बना यह बांका
बस एक एक.....

एक एक धर पत्थर
यह आलीशान बना घर
बस एक एक.....

एक एक चढ़ ज़ीना
मैं नीचे गिरूं कभी ना
बस एक एक.....

एक एक सब मिल कर
जग को डर किसका है तिल भर
बस एक एक.....

आगे बढ़ें

आगे बढ़ें, आगे बढ़ें गाते-बजाते
भारत के धीर-वीर बालक हैं हम,
सुमधुर कंठों से शाला गुंजाते
बायें-दायें बायें-दायें धरते क़दम।

मस्तक को अपने ऊंचा उठाके
चुस्ती को साथ ले आलस हटाके,
मन में उत्साह लिये हो के मगन,
घुंघरू झनकार करें झन झन झन
झन झन झन, झन झन झन!
घुंघरू झनकार करें झन झन झन।

आगे बढ़ें, आगे बढ़ें तबले की ताल पे,
आंखों में मस्ती, लाली है गाल पे,
रखेंगे हम अपने सीधे बदन,
मन में उत्साह लिये हो के मगन।

सुमधुर कंठों से शाला गुंजाते,
आगे बढ़ें, आगे बढ़ें गाते-बजाते,
घुंघरू झनकार करें झन झन झन!
झन झन झन झन झन झन
घुंघरू झनकार करें झन झन झन!

कहने को हैं नन्हें सही

कहने को हैं नन्हें सही
पर फिर भी फ़र्माते हैं हम,
कूद कर आकाश से
तारे तुम लाते हैं हम।

हम ग़रीबों पर सदा
टेढ़ी नज़र है आपकी,
आपकी करते नक़ल,
उसकी सज़ा पाते हैं हम।

देख सिग्रेट का धुआं
वह दिल में उठती है हुड़क,
बतियां बट काग़ज़ी
बीड़ी बना लाते हैं हम।

जो कुछ दिखाया आपने,
देखा वही सीखा वही,
फिर भला नाराज़ क्यों
जब उसको दोहराते हैं हम?

सोचा कभी है आपने
जितने हैं हम, फ़ितने हैं हम,
आपकी ही आपको
बातें सुना जाते हैं हम।

फिर भी रखते हैं मगर
सीने में दिल इतना बड़ा,
धुड़की मिले, झिड़की मिले,
सब कुछ पचा जाते हैं हम।

आप पर बन कर ख़ुदा
कुछ इस तरह छाते हैं हम,
जितनी हो मुट्ठी में अक़्ल,
तौला लगा जाते हैं हम!

चाय गरम

चाय गरम तो चाय गरम,
पीलो भाई चाय गरम,
लेकर आई चाय गरम।

जब बाबा बिस्तर से उठते,
सबसे पहले चाय गरम!
भर कर प्याला चाय गरम!

मेरी दादी नित झल्लाती,
भाड़ में जाये चाय गरम!
ख़ून सुखाये चाय गरम!

दादी कहतीं जब छोटी थीं,
भर दूध कटोरे में पीते थे,
बड़ी उमर तक तब जीते थे,
अब सबको देखो चाय गरम!

दादी कहतीं जब छोटी थीं,
थे स्वर कबीर के कानों में,
अब जौहर फ़िल्मी गानों में,
है यही तो लाई चाय गरम!

दादी कहतीं जब छोटी थीं,
था ऐब सुना दो चोटी में,
अब भेद खरी ना खोटी में,
यह गज़ब ढाए चाय गरम!

दादी कहतीं जब छोटी थीं
बच्चे तख़्ती पर लिखते थे,
कागज़ पेन्सिल कब दिखते थे?
अब रूपये लुटाये चाय गरम!

दादी कहतीं जब छोटी थीं
थीं बन्धनवारें फूलों की,
अब टंगती हैं बैलूनों की,
यह रंग दिखाये चाय गरम!

दादी कहतीं जब छोटी थीं
थे बच्चे तब भोले-भाले,
अब आफ़त के हैं परकाले,
उफ़! दूर बलाए चाय गरम!

डाक्टर

मेरी गुड़िया है बीमार,
रामू नौकर के तैय्यार
डाक्टर को लेकर आओ,
जल्दी भागो, जाओ-जाओ।

डाक्टर आ पहुंचा झटपट,
लकड़ी ठोके खट-खट, पट-पट!
देखा, बोला मूड़ हिला कर,
इसे सुला दो दवा पिला कर।

कम्बल अच्छी तरह उढ़ाओ
कमरे में मत शोर मचाओ
कल देखूंगा फिर एक बार
रखना मेरी फ़ीस तैय्यार।

रेशम रानी

कहती कोको एक कहानी
लड़की है इक रेशम रानी।

गिटपिट गिटपिट बात बनाती
हाथ हिलाती, मुँह मटकाती।

आती है वह बाल बिखेरे
कंघी करती नहीं सबेरे।

खूब मचाती चीख़ा-चिल्ली
लड़की है कि बागड़ बिल्ली!

हुआ सबेरा

हुआ सबेरा, हुआ सबेरा,
चिड़ियों ने तज दिया बसेरा।
खिल-खिल कर सब कलियां जागीं,
चहक-चहक कर चिड़ियां जागीं
तज कर अपना रैन बसेरा।

हुआ सबेरा, हुआ सबेरा।
फूलों की जागी हर क्यारी
स्वागत करने बारी-बारी।
नीला-पीला रंग बखेरा
हुआ सबेरा, हुआ सबेरा।

सर-सर करके पवन ने खेला,
बेला सुन्दर है अलबेला।
उजला-उजला और सुनहरा
हुआ सबेरा, हुआ सबेरा।

घर में सारे बच्चे जागे,
हाथ मुहं धो सब से आगे
पढ़ने बैठा श्यामू मेरा
हुआ सबेरा, हुआ सबेरा।

बुड्ढा महाराज कुचला गया मोटर से आज

मेरी दादी, मेरी दादी
क्या है बेटा, बोली दादी,
बुरा हुआ है बुरा हुआ,
हय् हय् बेटा क्या हुआ?

वह अपना बुड्ढा महाराज
कुचला गया मोटर से आज।
बड़ी चोट है उसको आई,
याद आ गई अपनी माई।

पड़ा-पड़ा वो रोता है,
आँसू से मुँह धोता है।
कोई नहीं बचाने वाला,
भाग गया है मोटर वाला।

सुनकर दादी बड़ी घबराई,
राम-राम ही मुँह को आई
चल बेटा देखें महाराज,
जो कुचला मोटर से आज।

जल्दी-जल्दी कदम बढ़ाये,
ये कह दोनों बाहर आये
दादी ने जो नज़र घुमाई
तो न दिया महाराज दिखाई।

पड़ा हुआ था बुड्ढा भू पर
और खेल की मोटर ऊपर।
'धत् तेरे की,' दादी बोली
और हँस पड़ी बुढ़िया भोली।

मेंढकी या शेर

मेंढकी जब टर्राई
हम ने समझा शेर है,
मन ने यूं समझा दिया,
यह सब अकल का फेर है!